International Journal of Research
e-ISSN: 2348-6848 & p-ISSN 2348-795X Vol-5, Special Issue-9
International Seminar on Changing Trends in Historiography: A Global Perspective
Held on 2nd February 2018 organized by **The Post Graduate Department of History. Dev Samaj College for Women, Ferozepur City, Punjab, India**

क़ुतुब काम्प्लेक्स में जाहिर इतिहास

अमित कुमार सिंह, अमनदीप कौर

*असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, देव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब

छात्रा, MA, इतिहास, (द्वितीय वर्ष) देव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब

शोध संक्षेप

सल्तनत काल की शान कुतुब मीनार, 120 मीटर ऊँची मोहाली की फ़तेह बुर्ज के बाद भारत की दुसरी सबसे बड़ी मीनार है। कुतुबमीनार का सम्बन्ध पूर्व मध्यकाल से है, कुतुब मीनार का आस-पास का परिसर कुतुब कॉम्पलेक्स से घिरा हुआ है, जो एक UNESCO वर्ल्ड हेरिटेज साईट भी है। कभी यह स्थान किला राय पिथौरा के नाम से जाना जाता था लेकिन आज इसे महरौली कहा जाता है। यह मीनार लाल पत्थर और मार्बल से बनी हुई है, कुतुब मीनार 72.5 मीटर (237.8 फ़ीट) ऊँची है जिसका डायमीटर 14.32 मीटर (47 फ़ीट) तल से और 2.75 मीटर (9 फ़ीट) चोटी से है। मीनार के अंदर गोल सीढ़ियाँ है, ऊँचाई तक कुल 379 सीढ़ियाँ है। इस रिसर्च पेपर में मेरा उद्देश्य है कुतुब मीनार के उस रोचक और अनूठे पहलू को सामने लाना जो विश्व इतिहास में एक शाहकार है।

मुख्य शब्द- क़ुतुबमीनार, कुतुबुद्दीन ऐबक, क़ुतुब काम्प्लेक्स, अलाई मीनार

भूमिका

कुतुबमीनार का निर्माण दिल्ली सल्तनत के प्रथम सुलतान कुतुबुद्दीन ऐबक के द्वारा शुरू किया गया लगभग 1200 ई. में। 1220 ई. में ऐबक के उत्तराधिकारी और पोते इल्तुमिश ने क़ुतुब मीनार में तीन और मंजिलें बनवाईं। 1369 ई. में कुतुबमीनार की सबसे उपरी मंजिल बिजली के आघात का शिकार बन गयी और छतिग्रस्त हो गयी अतः जब तुगलक वंश गद्दी पर काबिज हुआ तो फिरोज शाह तुगलक , जिसे इमारतों के निर्माण से बहुत लगाव था, ने

कुतुबमीनार के हर साल 2 मंजिलों के निर्माण व बाद के रखरखाव का समुचित बंदोबस्त किया।[1]

क़ुतुब मीनार का परिसर स्वयं में इतिहास की अमूल्य थाती को संजोये हुए है । कहने को इसे हम 'क़ुतुब काम्प्लेक्स' कहते हैं लेकिन वस्तुतः यह इल्बारी वंश के तमाम ऐतिहासिक गौरव को अपने भीतर समाहित किया हुआ है । इस परिसर में दिल्ली का सुप्रसिद्ध लौह स्तम्भ, भारत में बनी प्रथम मस्जिद कुवत उल इस्लाम मस्जिद, अलाउद्दीन खल्जी द्वारा बनवाया गया अलाई दरवाजा, अलाउद्दीन के द्वारा ही निर्मित अलाउद्दीन मदरसा तथा इमाम मकबरा शामिल हैं । इसके अतिरिक्त क़ुतुब काम्प्लेक्स अन्य बहुमूल्य ऐतिहासिक इमारतों से भी गुलजार है । यदि हम मात्र क़ुतुब काम्प्लेक्स के इमारतों के आधार पर ही दिल्ली सल्तनत का इतिहास लिखना चाहें तो निश्चित ही गुलाम वंश से लेकर तुगलक वंश तक की सम्पूर्ण गाथा इसमें उकेरी हुई है। ये इमारतें इमारतें ही नहीं बल्कि भारत में तुर्क शासकों की गौरव गाथा भी हैं ।

क़ुतुब नाम वस्तुतः सुप्रसिद्ध तत्कालीन सूफी संत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी से लिया गया है जो चिश्ती सिलसिले के पहले संत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती के शिष्य थे । कुतुबुद्दीन ऐबक ने उन्ही के नाम पर उन्हें सम्मान देने हुए क़ुतुब मीनार का नामकरण किया था । कुतुबमीनार का वास्तुकार भारतीय नहीं बल्कि तुर्की था ।[2] लेकिन क़ुतुब मीनार के सम्बन्ध में इतिहास में हमें कोई भी दस्तावेज नही मिलता है। एक किम्वदंती यह भी है कि क़ुतुब मीनार का निर्माण पृथ्वी राज चौहान ने करवाया था और इसका नाम रखा 'ध्रुव स्तम्भ' लेकिन इसके कोई पुख्ता ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलते । पारसी-अरेबिक और नागरी भाषाओ में भी हमें क़ुतुब मीनार के इतिहास के कुछ अंश दिखाई देते है। क़ुतुब मीनार के सम्बन्ध में जो भी इतिहासिक जानकारी उपलब्ध है वो फ़िरोज़ शाह तुगलक (1351-89) और सिकंदर लोदी (1489-1517) के काल के इतिहासकारों से मिली है।

कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद कुतुब मीनार के उत्तर में ही स्थापित है, जिसे कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1192 में बनवाया था। भारतीय उपमहाद्वीप की यह काफी प्राचीन मस्जिद मानी जाती है संभवतः भारत की पहली मस्जिद भी । लेकिन बाद में कुछ समय बाद इल्तुमिश (1210-35) और अला-उद-दिन ख़िलजी ने मस्जिद वास्तुकला में महत्वपूर्ण का विकास किया।[3]

[1] Nath,R। (2010), *Glories of Medieval Delhi*: Delhi: B।A। Publishing , P-21
[2] Chauhan, Piyush, (2012), *Medieval India,* Delhi: Darling Kindersley, pp- 81,82
[3] Sabhrawal, S.P. (1997), *History of Medieval India,* Jalandhar: Vijay Duggal, P-16

1368 AD में बिजली गिरने की वजह से मीनार की ऊपरी मंजिल क्षतिग्रस्त हो गयी थी और बाद में फ़िरोज़ शाह तुगलक ने इसका पुनर्निर्माण करवाया। इसके साथ ही फ़िरोज़ शाह ने सफ़ेद मार्बल से 2 और मंजिलो का निर्माण करवाया और संगमरमर का क़ुतुब मीनार में बेहतरीन प्रयोग हुआ। 1505 में एक भूकंप की वजह से क़ुतुब मीनार को काफी क्षति पहुंची जिसे बाद में सिकंदर लोदी ने ठीक किया था।[4] 1 अगस्त 1903 को एक और भूकंप आया, और फिर से क़ुतुब मीनार को क्षति पहुंची, लेकिन फिर ब्रिटिश इंडियन आर्मी के मेजर रोबर्ट स्मिथ ने 1928 में उसको पुनर्निर्मित करवाया और साथ ही कुतुब मीनार के सबसे ऊपरी भाग पर एक गुम्बद भी बनवाया जिसे बाद में पकिस्तान के गवर्नल जनरल लार्ड हार्डिंग के कहने पर हटा दिया गया[5]।

क़ुतुब मीनार को सबसे ऊँचे गुम्बद वाली मीनार माना जाता था, कुतुब मीनार की छठी मंजिल को 1848 में नीचे ले लिया गया था लेकिन बाद में इसे कुतुब कॉम्पलेक्स में ही दो अलग-अलग जगहों पर स्थापित किया गया था। आज इसे बने 100 साल से भी ज्यादा का समय हो चुका है।[6] इल्तुमिश की न दिखाई देने वाली कब्र भी क़ुतुब काम्प्लेक्स का एक रहस्य है जो 1235 AD में बनी थी और इस पर इतिहासकारों मर मतभेद है कि क्या वही इल्तुमिश की वास्तविक कब्र है? इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है । बलबन के बाद दिल्ली सल्तनत पर अलाउद्दीन खिलजी का शासन आया और अलाउद्दीन अलाई मीनार के रूप में क़ुतुब मीनार से भी बड़ी मीनार ठीक उसके पास ही बनवा रहा था । पहले यह तथ्य ज्ञात नहीं था लेकिन इस रहस्य को 1914 में खोजा गया । वह तो यदि अलाई मीनार बन गयी होती तो वह क़ुतुब मीनार से भी बड़ी होती। अलाई मीनार की शुरुवात 1311 AD में हुई। इस मीनार की योजना क़ुतुब मीनार से भी ज्यादा ऊँची, बड़ी और विशाल थी । 1316 AD में अला-उद-दिन ख़िलजी की मृत्यु हो गयी थी और तभी से अलाई मीनार का काम रुका हुआ है।

[4] Chandra, Satish (2000), *Medieval India,* New Delhi: Jawahar Pub. P-238।
[5] Sinha, Vipin Bihari (2001), *Delhi Sultanate,* New Delhi: Gyanda Publication, p- 285
[6] Nath,R. (2010), *Glories of Medieval Delhi*: Delhi: B.A. Publishing , P-81

क़ुतुब काम्प्लेक्स की सबसे नयी धरोहर तक़रीबन 500 साल पुरानी है जिसे इमाम ज़ामिन की कब्र कहते हैं इसे दुसरे मुग़ल शासक हुमायूँ ने 1538 AD में बनवायी थी और आज कुतुब मीनार कॉम्पलेक्स में यह सबसे नयी धरोहर है।

वैसे तो क़ुतुब मीनार की सीढ़ियों को सुरक्षा कारणों से आज बंद कर दिया गया है लेकिन आज भी कुतुब मीनार की छठी मंजिल तक जाया जा सकता है ।

क़ुतुब काम्प्लेक्स का एक और शाहकार है धूप घड़ी। जिस इंसान ने क़ुतुब मीनार कॉम्पलेक्स बनवाया उसी की याद में वहा एक धूप घडी भी लगवायी गयी है। इस इमारत का नाम ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर रखा गया।[7] ऐसा माना जाता है कि क़ुतुब मीनार का प्रयोग पास बनी मस्जिद की मीनार के रूप में होता था और यहाँ से अजान दी जाती थी। लाल और हल्के पीले पत्थर से बनी इस इमारत पर क़ुरान की आयतें लिखी हैं। मूल रूप से क़ुतुबमीनार सात मंज़िल का था लेकिन अब यह पाँच मंज़िल का ही रह गया है। क़ुतुब मीनार की कुल ऊँचाई 72.5 मीटर है और इसमें 379 सीढ़ियाँ हैं। समय-समय पर इसकी मरम्मत भी हुई है। इसकी दीवारों पर जिन बादशाहों ने इसकी मरम्मत कराई उनका उल्लेख मिलता है। क़ुतुब मीनार परिसर में और भी कई इमारते हैं। भारत की पहली कुव्वत-उल-इस्लाम-मस्जिद, अलाई दरवाज़ा और इल्तुतमिश का मक़बरा के अलावा इसके पास सुल्तान इल्तुतमिश, अलाउद्दीन ख़िलज़ी, बलबन व अकबर की धाय माँ के पुत्र अधम ख़ाँ के मक़बरे भी स्थित हैं।[8]

निष्कर्ष

क़ुतुब मीनार लालकोट स्मारक के ऊपर स्थित बहुत ऊँची मीनार है, यह दिल्ली के सर्वाधिक प्रसिद्ध स्थलों में से एक है। कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1199 में क़ुतुब मीनार का निर्माण शुरू करवाया था और उसके दामाद एवं उत्तराधिकारी शमशुद्दीन इल्तुतमिश ने 1368 में इसे पूरा कराया। एक मान्यता यह भी है की क़ुतुब मीनार का निर्माण पृथ्वी राज चौहान ने किला राय पिथौरा के भीतर ज्योतिष के अध्ययन के तौर पर करवाया था। पृथ्वी राज रासो में ऐसा वर्णन मिलता है लेकिन पृथ्वी राज रासो को हम पुरी तरह से ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं मान सकते क्यों कि यह एक प्रशस्ति है जो पृथ्वी राज चौहान की अनुशंसा में लिखी गयी थी। लेकिन जो भी हो, हमें कुछ जानकारी इससे जरूर मिलती है क्यों कि पृथ्वी राज चौहान

[7] Pour, M. (2014), *History of India,* Jalandhar: Balwant Pub. P-14
[8] Sinha, Vipin Bihari (2001), *Delhi Sultanate,* New Delhi: Gyanda Publication, p- 286

ने जिस मीनार को ध्रुव स्तम्भ के रूप में दर्शाया है वह उसी स्थान पर वर्णित है जहाँ आज क़ुतुब मीनार स्थित है। लेकिन एक संदेह यह भी है कि स्तम्भ का अर्थ मीनार नहीं होता और स्तम्भ में मंजिलें नहीं होतीं। जो भी हो, क़ुतुब मीनार और इसमें स्थित इमारतें आज एक आश्चर्य के तौर पर हमारे समक्ष अवश्य हैं और मध्यकालीन भारत के गौरव को बखूबी बयाँ करतीं हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Chandra, Satish (2000), *Medieval India,* New Delhi: Jawahar Pub.
2. Chauhan, Piyush, (2012), *Medieval India,* Delhi: Darling Kindersley
3. Mahajan, V.D., (2008), *Medieval India,* New Delhi: S. Chand
4. Nath,R. (2010), *Glories of Medieval Delhi*: Delhi: B. A. Publishing
5. Pour, M. (2014), *History of India,* Jalandhar: Balwant Pub
6. Sabhrawal, S.P. (1997), *History of Medieval India,* Jalandhar: Vijay Duggal.
7. Sinha, Vipin Bihari (2001), *Delhi Sultanate,* New Delhi: Gyanda Publication.
8. Sinha, Vipin Bihari (2001), *Delhi Sultanate,* New Delhi: Gyanda Publication.